BA-I Date Page-1.
21/8/20
Paper-1.
Unit-2.

Dr. Raj Gopal,
Assistant Professor (G.P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar.
Mail ID:- rajgopal7155@gmail.com

Basic Features of Indian Philosophy (Lecture-3)
(भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ (व्याख्यान-3)

कर्म सिद्धान्त में विश्वास :- भारतीय दर्शन का तीसरा साम्य कर्म सिद्धान्त में विश्वास माना जाता है। चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दार्शनिक कर्म सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। 'कर्म सिद्धान्त' का अर्थ है जैसा हम बोते हैं वैसा ही हम काटते हैं। इसके अनुसार 'कृत प्रणाश' अर्थात बिना किये हुए कर्मों के फल भी प्राप्त नहीं होते हैं, हमे सदैव कर्मों के फल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार से सुख-दुख हमारे अच्छे और बुरे कर्मों के अनिवार्य फल हैं।

कर्म सिद्धान्त के अनुसार हमारा वर्तमान जीवन हमारे अतीत जीवन के कर्मों का फल है। साथ ही भविष्य जीवन वर्तमान जीवन के कर्मों का फल होगा। अतः कर्म सिद्धान्त से भूत भविष्य एवं वर्तमान जीवनों को कारण-कार्य श्रृंखला में बाँधा गया है। इस प्रकार कर्म सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है।

कर्म सिद्धान्त का प्रथम बीज वेद दर्शन में सन्निहित है। वैदिक ऋषियों को नैतिक व्यवस्था में आस्था था। नैतिक व्यवस्था को ऋत कहते थे जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'जगत की व्यवस्था' जगत की व्यवस्था के अन्तर्गत नैतिक व्यवस्था भी समाहित थी। यह ऋत का विचार उपनिषद् दर्शन में कर्मवाद का रूप ले लिया है। न्याय-वैशेषिक दर्शन में कर्म सिद्धान्त को 'अदृष्ट' कहा जाता है। क्योंकि यह दृष्टिगोचर नहीं होता है, विश्व की सभी वस्तुएँ यहाँ तक की परमाणु भी इस नियम से [illegible]

Scanned with CamScanner

होती है। अदृष्ट का संचालन ईश्वर के अधीन है। अदृष्ट अचेतन होने के कारण स्वयं फलवान नहीं होता है।
मीमांसा दर्शन में कर्म सिद्धान्त को अपूर्व कहा जाता है। यह स्वसंचालित है। इसे संचालित करने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है।

भारत के सभी दार्शनिक कर्म सिद्धान्त के क्षेत्र को सीमित मानता है। कर्म सिद्धान्त सभी कर्मों पर लागु नहीं होता है। यह उन्हीं कर्मों पर लागु होता है जो राग, द्वेष, वासना क्रोध आदि द्वारा संचालित होता है। अर्थात वैसे कर्म जो किसी उद्देश्य या स्वार्थ की भावना से किये जाते हैं; कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत आते है। इसके विपरीत वैसे कर्म जो निष्काम किये जाते है, कर्म सिद्धान्त के द्वारा शासित नहीं होते हैं। दूसरे शब्दों में निष्काम कर्म कर्म-सिद्धान्त से स्वतंत्र है। निष्काम कर्म भूंजे हुए बीज के समान है जो फल देने में असमर्थ है।

कर्म के दो अर्थों मे प्रयोग किया जाता है साधारणतः कर्म शब्द का प्रयोग कर्म सिद्धान्त के रूप में किया जाता है। दूसरे अर्थ में कर्म शब्द का प्रयोग अतीत के कर्म में भी प्रयुक्त होता है, जिसके फलस्वरूप फल की उत्पति होती है। इस दृष्टिकोण से कर्म तीन प्रकार के होते हैं।

(i) संचित कर्म

(ii) प्रारब्ध कर्म

(iii) संचियमान कर्म

स्वार्थ रहित कर्म फल के आगमन में रहेंगे।